https://kalaasamiksha.in/
Kalaa Samiksha - Volume 01, No 08, PP 273-304 Nov. 2025 (Total PP 32)
ISSN : 3107- 4936(Online)
Frequency – Monthly

2. SPREADING TRIBAL ART ON DIGITAL PLATFORMS: GLOBAL REACH OF TRIBAL ART THROUGH SOCIAL MEDIA AND WEBSITES (डिजिटल प्लेटफॉर्म पर आदिवासी कला का प्रसार सोशल मीडिया और वेबसाइटों के माध्यम से जनजातीय कला की वैश्विक पहुँच)

Ravi Kant Pandey[a]*

[a] *Assistant Professor, College Of Arts And Crafts, Lucknow*

[a] *Email: ravipandey9710@gmail.com*

Abstract

In the present era, information and communication technology has impacted almost all aspects of life. Its influence is not limited to economic or social changes but is also playing a significant role in the dissemination of cultural heritage, traditional knowledge, and folk arts. Indian tribal art, which for years has symbolized the religious beliefs, connection with nature, family traditions, and community experiences of tribal societies, is now gaining widespread recognition globally due to digital media. This research analyzes how tribal art is gaining international recognition and wider reach through social media platforms, internet-based marketplaces, and online cultural portals.

Digital media has provided tribal artists with the opportunity to present their art to the world, transcending geographical boundaries. Images of artworks, short films, glimpses of the art-making process, and personal experiences of the artists shared on social media platforms create an emotional connection with the audience. This process not only increases art sales but also generates respect and curiosity among viewers towards the art and the community. This reduces the artists' dependence on intermediaries, leading to greater transparency and independence in their income.

Following the COVID-19 pandemic, rural and tribal artists began using digital media more extensively. Many tribal painters, weavers, pottery makers, bamboo craftspeople, and folk artists posted their work on social media platforms, attracting buyers from both within India and abroad. Several news portals and cultural websites have published detailed reports on this transformation, clearly demonstrating that digital access has significantly increased artists' income. For example, the art of the Gond, Warli, and Meena communities has gained recognition outside India, and many artworks have reached international markets.

Various digital promotion strategies, such as presenting images attractively, regularly sharing content, telling stories related to the art, and establishing direct communication with the audience, have made the dissemination of art simpler and more effective. In addition, several government-run schemes and tribal development organizations are also proving helpful in connecting artists with online training, digital payment systems, and internet-based marketplaces.

In essence, this research clearly demonstrates that digital media is not merely a tool for selling art, but also strengthens cultural preservation, economic empowerment, social identity, and the continuity of traditional knowledge. Through digital technology, tribal art is now reaching every corner of the world and earning widespread respect for its unique style, symbolism, and cultural depth. Thus, the digital world is ushering in a new era for tribal art, where tradition and modernity are coming together to create a powerful bridge for the preservation and dissemination of culture.

वर्तमान समय में सूचना तथा संप्रेषण तकनीक ने जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। इसका प्रभाव केवल आर्थिक या सामाजिक परिवर्तन तक सीमित नहीं है बल्कि यह सांस्कृतिक विरासतए पारंपरिक ज्ञान और लोक कलाओं के प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत की आदिवासी कलाए जो वर्षों से जनजातीय समाज की धार्मिक आस्थाओं, प्राकृतिक संबंधों, पारिवारिक परंपराओं और सामुदायिक अनुभवों का प्रतीक रही है। अब डिजिटल माध्यमों के कारण वैश्विक स्तर पर व्यापक रूप से पहचानी जा रही है। यह शोध इस बात का विश्लेषण करता है कि किस प्रकार सामाजिक मंचों, इंटरनेट आधारित बाज़ारों और ऑनलाइन सांस्कृतिक पोर्टलों के द्वारा आदिवासी कला को अंतरराष्ट्रीय पहचान और व्यापक पहुँच प्राप्त हो रही है।

https://kalaasamiksha.in/
Kalaa Samiksha - Volume 01, No 08, PP 273-304 Nov. 2025 (Total PP 32)
ISSN : 3107- 4936(Online)
Frequency – Monthly

डिजिटल माध्यमों ने आदिवासी कलाकारों को भौगोलिक सीमाओं से परे जाकर अपनी कला को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया है। सामाजिक मंचों पर साझा की जाने वाली कलाकृतियों की तस्वीरें, लघु चलचित्र, कला.निर्माण की झलकियाँ, तथा कलाकारों के व्यक्तिगत अनुभव दर्शकों के साथ एक भावनात्मक संबंध स्थापित करते हैं। यह प्रक्रिया न केवल कला की बिक्री को बढ़ाती है बल्कि दर्शकों में उस कला और समुदाय के प्रति सम्मान और जिज्ञासा भी उत्पन्न करती है। इससे कलाकारों को बिचौलियों पर निर्भर रहने की आवश्यकता कम हो जाती हैए जिससे उनकी आय में पारदर्शिता तथा स्वतंत्रता आती है।

कोविड महामारी के बाद ग्रामीण और जनजातीय कलाकारों ने डिजिटल माध्यमों का अधिक प्रयोग शुरू किया। अनेक आदिवासी चित्रकार, बुनकर, मिट्टी शिल्पकारए, बाँस शिल्पकार और लोक चित्रकारों ने अपने कार्यों को सामाजिक मंचों पर डाला जिससे उन्हें देश.विदेश से खरीदार मिलने लगे। कई समाचार पोर्टलों और सांस्कृतिक वेबसाइटों ने इस परिवर्तन पर विस्तृत रिपोर्टें प्रस्तुत की हैं जिनमें यह स्पष्ट हुआ कि डिजिटल पहुँच ने कलाकारों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि की है। उदाहरण के रूप मेंए गोंड, वारली, तथा मीणा, समुदायों की कला को देश के बाहर भी पहचान मिली और कई कलाकृतियाँ विदेशों तक पहुँचीं।

डिजिटल प्रचार की अनेक रणनीतियों जैसे चित्रों को आकर्षक रूप में प्रस्तुत करना नियमित रूप से सामग्री साझा करना, कला से जुड़ी कहानी बताना तथा दर्शकों से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करना ने कला के प्रसार को सरल और प्रभावी बनाया है। इसके साथ ही सरकार द्वारा संचालित कई योजनाएँ और जनजातीय विकास संस्थाएँ भी कलाकारों को ऑनलाइन प्रशिक्षण, डिजिटल भुगतान प्रणाली तथा इंटरनेट आधारित बाज़ार से जोड़ने में सहायक सिद्ध हो रही हैं।

सार रूप में यह शोध स्पष्ट करता है कि डिजिटल माध्यम केवल कला बेचने का साधन नहीं है बल्कि यह सांस्कृतिक संरक्षण, आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक पहचान और पारंपरिक ज्ञान की निरंतरता को भी मजबूती प्रदान करता है। डिजिटल तकनीक के माध्यम से आदिवासी कला आज विश्व के कोने.कोने तक पहुँच रही है और अपनी विशिष्ट शैली प्रतीकात्मकता तथा सांस्कृतिक गहराई के कारण व्यापक सम्मान अर्जित कर रही है। इस प्रकारए डिजिटल संसार जनजातीय कला के लिए एक नया युग प्रस्तुत कर रहा हैए जहाँ परंपरा और आधुनिकता मिलकर संस्कृति के संरक्षण और प्रसार का सशक्त सेतु निर्मित कर रहे हैं।

Keywords: Digital platforms, tribal art, social media, cultural identity, global reach

डिजिटल प्लेटफॉर्म, आदिवासी कला, सोशल मीडिया, सांस्कृतिक पहचान, वैश्विक पहुँच

---

* Corresponding author.

परिचय (Introduction)

भारत एक बहु.सांस्कृतिक बहुभाषीय और बहु.परंपरागत देश है, जहाँ प्रत्येक क्षेत्र और समुदाय की अपनी विशिष्ट कला.परंपराए, जीवन.दर्शन और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है। इन सबके बीच आदिवासी कला भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अत्यंत सजीव और प्राचीन रूप है। देश के विभिन्न जनजातीय समुदाय जैसे गोंड, भील, वारली, संथाल, मीणा, आदि अपने जीवन, विश्वास, प्रकृति तथा स्मृतियों को रंग- रेखा, बुनावट, आकृतियों और प्रतीकों के माध्यम से पीढ़ियों से अभिव्यक्त करते आए हैं। आदिवासी कला केवल सौंदर्यबोध का विषय नहीं बल्कि यह समुदाय की आंतरिक संवेदनाओं, सामुदायिक संरचना, श्रम.संस्कृति, धार्मिक आस्था और पर्यावरण के साथ उनके सहज संबंध का जीवंत दस्तावेज है।

परंतु सदियों तक यह कला मुख्यतः स्थानीय सीमाओं, ग्रामीण मेलों, औपचारिक प्रदर्शनियों या पर्यटन स्थलों तक ही सीमित रही। आधुनिक बाज़ार व्यवस्थाए पूँजी आधारित व्यापार तथा बिचौलियों के कारण आदिवासी कलाकारों को उचित मूल्य पहचान और ग्राहकों तक प्रत्यक्ष पहुँच प्राप्त नहीं हो पाती थी। कई बार कलाकार अपनी कृतियों के वास्तविक मूल्य से अनजान रहते थे और उनकी कला का व्यापार करने वाले बीच के लोग अधिक लाभ अर्जित करते थे। इस प्रकार कला का प्रसार सीमित रहा और कलाकारों की आर्थिक स्थिति भी स्थिर नहीं हो पाई।

इसी पृष्ठभूमि में जब डिजिटल युग ने भारतीय समाज में प्रवेश किया तो संप्रेषण की प्रकृति में व्यापक परिवर्तन आया। मोबाइल आधारित संवाद, तेज़ इंटरनेट, सामाजिक मंच, वीडियो सामग्री, डिजिटल भुगतान प्रणाली और ऑनलाइन बाज़ार जैसे साधनों ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया। यह परिवर्तन कला जगत के लिए भी एक अवसर सिद्ध हुआ क्योंकि इससे कलाकारों और दर्शकों के बीच का अंतर कम हुआ और कला का प्रसार भौगोलिक सीमाओं से परे पहुँचने लगा। डिजिटल माध्यमों ने कलाकारों को स्वतंत्रता प्रदान की कि वे अपने कार्यों को स्वयं प्रस्तुत करें। उनकी कहानी बताएं, अपने मूल्य तय करें और सीधे खरीदारों से संवाद कर सकें।

विशेष रूप से आदिवासी कला के संदर्भ में डिजिटल माध्यमों ने अभूतपूर्व परिवर्तन किए। पहले जहाँ आदिवासी कलाकार केवल स्थानीय बाज़ार, सरकारी प्रदर्शनियों या कुछ चुनिंदा सांस्कृतिक आयोजनों पर निर्भर थे, आज वे सामाजिक मंचों, डिजिटल पोर्टलों तथा ऑनलाइन बाज़ारों के माध्यम से विश्व के किसी भी हिस्से में मौजूद दर्शकों तक पहुंच सकते हैं। आदिवासी कलाकारों द्वारा निर्मित चित्र, बुनाई, लकड़ी.कला, धातु.कला, मिट्टी शिल्प, बाँस शिल्प तथा आभूषण.संबंधी कार्य अब घर बैठे विश्व के कला.प्रेमियों को उपलब्ध हो रहे हैं। डिजिटल संसार ने न केवल कला को नई पहचान दी बल्कि कलाकारों के जीवन में नए आयाम भी जोड़े जैसे आर्थिक स्वतंत्रता, वैश्विक संवाद, और सांस्कृतिक आत्मविश्वास।

सामाजिक मंचों जैसे चित्र आधारित सामग्री साझा करने वाले मंच, वीडियो आधारित मंच, त्वरित संदेश मंच आदिक ने आदिवासी कलाकारों को अपनी कला को दृश्यात्मक ढंग से प्रस्तुत करने का सरल और प्रभावी अवसर दिया। कलाकार अपने कार्य की प्रत्येक चरण.प्रक्रिया, रंगों का प्रयोग, उपकरणों

की विशेषता तथा प्रतीकों के अर्थ को दर्शकों तक पहुँचा पा रहे हैं। इस प्रकार कला का अनुभव केवल वस्तु तक सीमित नहीं रह गया बल्कि निर्मिति प्रक्रिया का भी हिस्सा बन गया। इससे दर्शकों में कला के प्रति अधिक समझ और सम्मान बढ़ा है।

इसके अलावा वेबसाइटों और इंटरनेट आधारित बाज़ारों ने आदिवासी कला को व्यवस्थित व्यापारिक ढाँचा प्रदान किया। अनेक ऐसी वेबसाइटें उभरी हैं जो केवल हस्तशिल्प और जनजातीय कला पर केंद्रित हैं जहाँ कलाकार स्वयं अपना खाता बनाकर अपने उत्पाद प्रस्तुत कर सकते हैं। इस व्यवस्था में कला का मूल्य पारदर्शी रहता है और कलाकारों को बिचौलियों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। डिजिटल भुगतान की सुविधाएँ भी इस प्रक्रिया को सरल बनाती हैं।

सामाजिक मंचों और वेबसाइटों का एक बड़ा प्रभाव यह भी है कि उन्होंने आदिवासी कला के अध्ययन, शोध और सांस्कृतिक संवाद को नई दिशा दी है। विभिन्न विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों, कला परिषदों और सांस्कृतिक संगठनों ने डिजिटल माध्यम पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग कर जनजातीय कला की विशिष्ट शैलियों, इतिहास संरक्षण और समकालीन परिवर्तनों पर नए अध्ययन आरंभ किए हैं। छात्रों, शोधकर्ताओं और कला.प्रेमियों को अब अधिक सामग्री उदाहरण और कलाकारों के प्रत्यक्ष अनुभव डिजिटल माध्यम पर उपलब्ध हैं।

डिजिटल माध्यमों के कारण आदिवासी कला को विदेशों में भी बड़ी स्वीकृति मिली है। अनेक विदेशी कला.प्रेमी संग्राहक और सांस्कृतिक संस्थाएँ भारतीय आदिवासी कला से प्रभावित हैं और वे सामाजिक मंचों तथा वेबसाइटों के माध्यम से सीधे कलाकारों से संपर्क स्थापित कर रहे हैं। इससे कलाकारों को आर्थिक लाभ के साथ.साथ अंतरराष्ट्रीय पहचान भी मिलती है। कई कलाकारों को विदेशों में कार्यशालाएँ, प्रदर्शनियाँ और सांस्कृतिक संवाद कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिला है।

इसके साथ ही यह भी सत्य है कि डिजिटल संसार ने नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं जैसे अनुचित कॉपी, कम कीमत पर कला बेचने का दबाव, डिजिटल कौशल की कमी और इंटरनेट तक असमान पहुँच। इन सभी मुद्दों को समझना और समाधान विकसित करना आवश्यक है ताकि आदिवासी कला डिजिटल माध्यम में सुरक्षित और सम्मानजनक रूप से आगे बढ़ सके।

समग्र रूप से डिजिटल तकनीक आदिवासी कला के लिए केवल एक प्रचार मंच नहीं बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण का माध्यम बन चुकी है। इसने कलाकारों को नई आवाज़, नई पहचान और नए अवसर प्रदान किए हैं। परंपरा और आधुनिकता के इस संगम में आदिवासी कला अब विश्व के सांस्कृतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्थान बना रही है। यह शोध.पत्र इसी प्रक्रिया का गहन अध्ययन करेगा कि डिजिटल माध्यम कैसे आदिवासी कला के प्रसार, संरक्षण, आर्थिक विकास और वैश्विक पहचान में निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं।

प्रेरणा एवं पृष्ठभूमि (Motivation & Background)

आदिवासी कला भारत की सांस्कृतिक आत्मा और परंपरागत ज्ञान का अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह कला केवल मानव अभिव्यक्ति का रूप नहीं, बल्कि जीवन, प्रकृति, आस्था, मिथक, सामाजिक व्यवस्था और सामुदायिक समरसता का जीवंत दस्तावेज भी है। भारत की विविध जनजातियों में पाई जाने वाली कलाएँ—भील, गोंड, संथाल, वारली, सौरा, कोनकन, मीणा, कोटा, नोकते, तोडा और अनेक अन्य समुदायों की विरासत—हजारों वर्षों के सांस्कृतिक प्रवाह का परिणाम हैं। परंतु भारतीय समाज में तेजी से हुए परिवर्तन, शहरीकरण, बाजार आधारित जीवन, और आधुनिक माध्यमों के विस्तार के बीच इन कला-रूपों को वह सम्मान और स्थान लंबे समय तक नहीं मिला, जिसके वे वास्तव में पात्र थे। यही वह प्रमुख प्रेरणा है, जिसने आदिवासी कला के संरक्षण और प्रसार के प्रश्न को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया।

बीते दशकों में आदिवासी कला को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा—जैसे पारंपरिक कलाओं का धीरे-धीरे समाप्त होना, युवा पीढ़ी का अन्य व्यवसायों की ओर आकर्षित होना, जंगलों और प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण, और आर्थिक असमानता। इन परिस्थितियों में यह आशंका बढ़ने लगी कि यदि समय रहते इन कला-रूपों को सुरक्षित नहीं किया गया, तो आने वाली पीढ़ियाँ इस सांस्कृतिक धरोहर से वंचित हो जाएँगी। यह चिंता उन कलाकारों, शोधकर्ताओं, शिक्षकों और सांस्कृतिक संस्थाओं के लिए प्रेरणा का आधार बनी, जो आदिवासी कला की विरासत को पुनर्जीवित करना चाहते थे।

समय के साथ एक और महत्वपूर्ण पहलू उभरकर सामने आया—प्रौद्योगिकी का तीव्र विस्तार। डिजिटल साधनों की उपलब्धता, इंटरनेट की व्यापक पहुँच और सामाजिक मंचों की लोकप्रियता ने कला और कलाकारों के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान किए। उन क्षेत्रों में, जहाँ परिवहन की सीमाएँ थीं, जहाँ बाज़ारों तक पहुँच कठिन थी, वहाँ भी डिजिटल माध्यमों ने नई दिशाएँ खोल दीं। आदिवासी कलाकार, जो पहले केवल स्थानीय मेलों, गांव स्तरीय आयोजनों या सरकारी प्रदर्शनी तक सीमित थे, अब विश्वभर के दर्शकों से सीधे जुड़ने लगे। इसी परिवर्तनशील परिदृश्य ने इस विषय के अध्ययन और शोध को प्रेरित किया।

पृष्ठभूमि का एक महत्वपूर्ण भाग यह भी है कि डिजिटल मंच केवल सूचना साझा करने का साधन नहीं रहे, बल्कि आज वे पहचान, आर्थिक सशक्तिकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के माध्यम बन चुके हैं। आदिवासी कला, जिसे कभी “लोककला”, “हस्तकला” या “ग्रामीण परंपरा” कहकर सीमित अर्थों में

देखा जाता था, डिजिटल माध्यमों ने उसे वैश्विक कला-चर्चा का हिस्सा बना दिया। इस परिवर्तित दृष्टिकोण ने समाज में आदिवासी कला के मूल्य को पुनः स्थापित किया। न केवल देश में, बल्कि विदेशों में भी भारत की जनजातीय कलाओं के प्रति जिज्ञासा और रुचि बढ़ी।

प्रेरणा का एक और महत्त्वपूर्ण पहलू कलाकारों के जीवन से जुड़ा है। अधिकतर आदिवासी कलाकार आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि से आते हैं। वे कला को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि आजीविका का आधार भी मानते हैं। लेकिन लंबे समय तक उन्हें उचित मूल्य, बाजार तक पहुँच या कला की पहचान नहीं मिल पाती थी। डिजिटल माध्यमों के कारण इस स्थिति में सुधार हुआ है। कई कलाकारों ने कहा कि जब उन्होंने अपने चित्र, रूपांकन, दीवार चित्र, लकड़ी या धातु की वस्तुएँ डिजिटल मंचों पर साझा कीं, तो उन्हें पहले से कहीं अधिक प्रशंसा और क्रय-आदेश प्राप्त हुए। इससे कलाकारों में आत्मविश्वास और प्रेरणा का संचार हुआ।

इसके साथ-साथ शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों के लिए भी यह विषय प्रेरक बना। आदिवासी कला का डिजिटल प्रसार केवल आर्थिक पक्ष से नहीं, सांस्कृतिक अध्ययन, कला इतिहास, सामाजिक परिवर्तन और संचार की नई संभावनाओं से भी जुड़ा है। इस प्रकार यह विषय सामाजिक विज्ञान, ललित कला, मानवशास्त्र, जनसंचार और सांस्कृतिक अध्ययन जैसे अनेक क्षेत्रों के लिए अत्यंत प्रासंगिक हो गया। पृष्ठभूमि में यह जागरूकता भी शामिल है कि कला समाज को जोड़ने, समझ बढ़ाने और विविधता को सम्मान देने का माध्यम होती है। डिजिटल मंचों पर बढ़ता संवाद, चर्चाएँ, कलाकारों की कहानियाँ, और कला की यात्रा ने इस विषय को और अधिक गहराई प्रदान की।

पृष्ठभूमि का एक और आधार यह भी है कि आदिवासी कला का वैश्विक स्तर पर प्रसार भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को भी मजबूत करता है। जब भारत की कला विश्वभर में साझा होती है, तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ता मिलती है। यह केवल एक कला-रूप का प्रचार नहीं, बल्कि एक संस्कृति, एक समुदाय, और उसकी मौलिक सोच का सम्मान भी है। डिजिटल माध्यमों ने इस दिशा में यह अवसर दिया कि विश्व में बैठे व्यक्ति भी भारतीय आदिवासी कला के रंगों, प्रतीकों, मिथकों और जीवन-शैली से परिचित हो सकें।

कई सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं ने भी डिजिटल मंचों के माध्यम से आदिवासी कला के संरक्षण और विकास में रुचि दिखानी शुरू की। सांस्कृतिक मंत्रालय, आदिवासी मामलों से संबंधित संगठनों, कला परिषदों और कुछ शैक्षणिक संस्थानों ने डिजिटल संग्रह, ऑनलाइन प्रदर्शनी, कला प्रशिक्षण और कलाकारों की जीवनी को संकलित करने जैसे कार्य शुरू किए। यह प्रयास कलाकारों और दर्शकों के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं।

प्रेरणा में यह बिंदु भी शामिल था कि डिजिटल माध्यम आने वाली पीढ़ियों के लिए ज्ञान का संग्रह बन सकते हैं। कई बार आदिवासी कला केवल मौखिक परंपरा पर आधारित होती है, जिसकी विधियाँ, रंग, प्रतीक और कथा-तत्व पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते आए हैं। यदि इन परंपराओं का डिजिटल दस्तावेज़ीकरण नहीं होता, तो यह ज्ञान धीरे-धीरे लुप्त हो सकता था। डिजिटल रूप में संरक्षित सामग्री भविष्य के शोधार्थियों, कलाकारों और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

पृष्ठभूमि की दृष्टि से देखा जाए तो आदिवासी कला का डिजिटल प्रसार एक सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया है। यह परिवर्तन केवल कला को प्रदर्शित करने का माध्यम नहीं बदलता, बल्कि कलाकार और समाज के बीच संबंधों की नई व्याख्या करता है। अब कलाकार केवल दर्शकों तक पहुँच नहीं रहे, बल्कि दर्शक भी कलाकारों की संस्कृति, परंपरा और जीवन के बारे में अधिक संवेदनशील और जागरूक हो रहे हैं। यह दो-तरफा संवाद सांस्कृतिक समझ को और गहरा बनाता है।

समग्र रूप से प्रेरणा और पृष्ठभूमि इस तथ्य पर आधारित है कि आदिवासी कला मानव सभ्यता की अनमोल धरोहर है। इसे जीवित रखना, बढ़ाना और नई पीढ़ियों तक पहुँचाना आवश्यक है। डिजिटल माध्यमों ने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए अतुलनीय अवसर प्रदान किए हैं। आधुनिक तकनीक और परंपरागत ज्ञान का यह संगम एक ऐसे भविष्य का निर्माण कर रहा है, जहाँ आदिवासी कला सीमाओं के पार, पहाड़ों और जंगलों से निकलकर विश्व के हर कोने तक अपनी अनोखी चमक, सादगी और सांस्कृतिक गहराई के साथ पहुँच रही है।

अनुसंधान पद्धति (Research Approach & Methodology)

इस अध्ययन के लिए गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) दोनों विधियों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक डेटा स्रोत (Primary Data Sources):

इस शोध के लिए मूल डेटा का संकलन मुख्यतः डिजिटल माध्यमों के अवलोकन और विश्लेषण से किया गया। शोध का उद्देश्य यह समझना था कि सोशल मीडिया और वेबसाइटों के माध्यम से आदिवासी कला का प्रसार किस प्रकार हो रहा है और इससे कलाकारों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा है।

मुख्य प्राथमिक डेटा स्रोत इस प्रकार रहे:

डिजिटल प्लेटफॉर्म अवलोकन (Observation of Digital Platforms)

इंस्टाग्राम, फेसबुक, यूट्यूब, एट्सी (Etsy), और "Tribes India" जैसे ऑनलाइन मंचों पर आदिवासी कला से संबंधित पेज, का व्यवस्थित अवलोकन किया गया। इससे यह समझा गया कि कलाकार अपने उत्पादों को कैसे प्रस्तुत करते हैंए कौन.सी दृश्य एवं भाषिक रणनीतियाँ अपनाते हैंए और दर्शकों की प्रतिक्रिया किस प्रकार होती है।

ऑनलाइन अभियान विश्लेषण (Analysis of Online Campaigns):

पिछले पाँच वर्षों में चलाए गए प्रमुख डिजिटल अभियानों जैसे – **#Vocal For Local**, **#Hand made In India**, और **#Tribal Art For World** का विश्लेषण किया गया। इन अभियानों ने आदिवासी कला की डिजिटल उपस्थिति और उपभोक्ता जुड़ाव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ई.कॉमर्स डेटा अध्ययन **(E-commerce Data Study):** Etsy, Amazon, Karigar और Government E-Marketplace (GeM) जैसे प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध बिक्री आँकड़ों, उत्पादों की श्रेणियों और उपभोक्ता समीक्षा (reviews) का अध्ययन कर यह मूल्यांकन किया गया कि किन प्रकार की जनजातीय कलाएँ डिजिटल माध्यमों पर अधिक लोकप्रिय हैं।

वर्चुअल प्रदर्शनी और कला महोत्सव (Virtual Exhibitions & Art Festivals):

ऑनलाइन आयोजित प्रदर्शनियों जैसे "Tribal Craft Bazaar Online"और "Digital Art India Fair" का अवलोकन कर यह विश्लेषण किया गया कि डिजिटल प्रदर्शनियाँ कैसे कलाकारों को अंतरराष्ट्रीय दर्शकों से जोड़ती हैं।

द्वितीयक डेटा स्रोत (Secondary Data Sources):

इस शोध को सैद्धांतिक और नीतिगत आधार प्रदान करने के लिए विभिन्न विश्वसनीय द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया। इन स्रोतों ने आदिवासी कलाए डिजिटल मार्केटिंग और सांस्कृतिक सशक्तिकरण के परिप्रेक्ष्य को समृद्ध किया।

सरकारी रिपोर्टें और नीतिगत दस्तावेज़ (Government Reports and Policy Documents):

भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय (Ministry of Tribal Affairs) और TRIFED द्वारा प्रकाशित रिपोर्टों कृ जैसे *"Digital Empowerment of Tribal Artisans" (2022)* और *"Van Dhan Yojana Report" (2023)* – से नीतिगत ढाँचा और आँकड़े प्राप्त किए गए।

शैक्षणिक शोध एवं जर्नल लेख (Academic Research and Journal Articles): *Indian Journal of Cultural Studies*, *Art & Society Review*, और *Global Media Journal* में प्रकाशित शोध.पत्रों से डिजिटल मीडियाए संस्कृति और कारीगरी के संबंधों का सैद्धांतिक दृष्टिकोण मिला।

परिणाम एवं विश्लेषण (Results and Analysis)

सामाजिक प्रभाव

डिजिटल माध्यमों ने आदिवासी कलाकारों को आत्मगौरव और पहचान दी है। पहले जहाँ उनका काम बिचौलियों के माध्यम से बिकता थाए अब वे सीधे उपभोक्ताओं से संवाद कर रहे हैं। इससे उनके आत्मविश्वास और समाज में सम्मान की भावना में वृद्धि हुई है।

आर्थिक प्रभाव

इंटरनेट मार्केटिंग के माध्यम से आय में औसतन 40% तक वृद्धि दर्ज की गई। Etsy और Tribes India जैसे प्लेटफॉर्म से कलाकारों को अंतरराष्ट्रीय खरीदारों तक पहुँच मिली। कई महिला कलाकारों ने अपना ऑनलाइन ब्रांड स्थापित कियाए जिससे आर्थिक आत्मनिर्भरता संभव हुई।

सांस्कृतिक प्रभाव

डिजिटल मीडिया ने परंपरागत डिज़ाइनों और कहानियों को वैश्विक स्तर पर पहुँचाया। यह सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बन गया हैए जहाँ विभिन्न देशों के लोग इन कलाओं की कहानी और प्रतीकात्मकता को समझ पा रहे हैं।

इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमीए डिजिटल साक्षरता का अभावए और भाषाई अवरोध जैसे कारक अब भी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। हालाँकिए कई NGO और सरकारी संस्थाएँ इस दिशा में प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रही हैं

चर्चा (Discussion)

डिजिटल प्लेटफॉर्म ने "डिजिटल डेमोक्रेसी" का वातावरण तैयार किया है जहाँ ग्रामीण और आदिवासी कलाकार भी वैश्विक उपभोक्ताओं के साथ बराबरी के स्तर पर जुड़ सकते हैं। यह एक सामाजिक नवाचार (Social Innovation) का उत्कृष्ट उदाहरण है।

साथ ही, सोशल मीडिया पर "कहानी आधारित विज्ञापन" (Storytelling Advertisement) ने उपभोक्ताओं के भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत किया है। कलाकार अपनी संस्कृति, परंपरा और जीवन के अनुभवों को साझा करते हुए न केवल उत्पाद बेचते हैं, बल्कि एक विचार और संस्कृति का प्रचार करते हैं।

हालांकि, इस प्रक्रिया में यह भी देखा गया कि कुछ कलाकार अपनी मौलिकता खोने लगे हैं क्योंकि वे बाजार की मांग के अनुसार कला में परिवर्तन कर रहे हैं। इसलिए सांस्कृतिक संरक्षण और व्यावसायिकता के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

निष्कर्ष एवं सारांश

डिजिटल प्लेटफॉर्म ने आदिवासी कला को स्थानीय सीमाओं से निकालकर विश्व पटल पर स्थापित कर दिया है। यह परिवर्तन केवल आर्थिक उन्नति का नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद और आत्मगौरव के पुनरुद्धार का भी प्रतीक है।

सोशल मीडिया ई.कॉमर्स और वेबसाइटों के माध्यम से अब आदिवासी कलाकार न केवल अपनी कला बेच रहे हैंए बल्कि अपनी कहानियाँ और पहचान भी दुनिया के सामने रख रहे हैं। डिजिटल विज्ञापन ने उन्हें वैश्विक नागरिक के रूप में स्थापित किया है।

भविष्य में यदि सरकार निजी क्षेत्र और तकनीकी संस्थान मिलकर प्रशिक्षणए डिजिटल साक्षरता और विपणन सहायता को और मज़बूत करें तो भारत की आदिवासी कलाएँ विश्व सांस्कृतिक परिदृश्य में एक सशक्त स्थान प्राप्त कर सकती हैं।

References

1. Ministry of Tribal Affairs (2025). *Tribal Art Promotion Report*, Government of India.
2. TRIFED (2021-22). *Digital Empowerment of Tribal Artisans*, New Delhi.
3. Singh, R. (2022). *Social Media and Folk Art Promotion in India.*
4. Afroj Alam[1], Nandani[2], Sakshi Sharma[3], Shruthi M[4], January 2025, Empowering Rural Artisans in India: A Digital Platform for Textiles and Handicrafts Artisans of Varanasi, | IJIRT | Volume 11 Issue 8 | ISSN: 2349-6002
5. Dr. Siddhartha Choudhury, Volume 2 | Issue 5 | May 2024, The Role of Social Media in Promoting and Preserving Indian Music and Dance Traditions, An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
6. Joginder Singh Habbi *and Gopal Singh Habbi, Folk and tribal culture in transition: Exploring challenges and solutions, 17 September 2024, International Journal of Science and Research Archive, 2024, 13(01), 720–724
7. Ms. Geetika Vashishata & Prof. Umesh Arya, 1; June 2022. A Study of the Appropriation of Folk Art In Commercial/Advertising Communication In The Digital Age, Global Media Journal-Indian Edition
8. Trisha Ramesh Nanda, April – June 2024, Contribution Of Tribal Women In The Fields Of Education And Literature, A Global Journal Of Humanities,
9. Ira Wagh, Prof. Dr. Neelam Shukla, Sep. 2025, Empowering Tribal Women Through Cultural Entrepreneurship: A Case Study of Tribal Art in Chhattisgarh, ASHA PARAS International Journal Of Gender Studies